संक्षिप्त परिचय

श्री सत्गुरुदेव मंगतराम जी एवं संगत समतावाद

संगत समतावाद (रजि०)

श्री सत्गुरुदेव मंगतराम जी महाराज

जन्म : नवम्बर 24, सन् 1903 ईस्वी

जन्म स्थान : गंगोठियां ब्राह्मणां, तहसील कहुटा
ज़िला रावलपिण्डी (पाकिस्तान)

महासमाधि : फरवरी 4, सन् 1954 ईस्वी (अमृतसर)

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

श्री सत्गुरुदेव महात्मा 'मंगतराम जी' महाराज वर्तमान युग के जन्म सिद्ध सत्पुरुष हुए हैं। आपका जन्म 24 नवम्बर 1903 के शुभ दिन मंगलवार को ग्राम गंगोठियां ब्राह्मणा ज़िला रावलपिण्डी (पाकिस्तान) में एक कुलीन कसाल ब्राह्मण वंश में हुआ। आपके पिता श्री का नाम पंडित गौरी शंकर जी और माता जी का नाम श्रीमती गणेशी देवी था। आपको तीन वर्ष की अल्पायु में परमात्मा की पूर्ण सूझ-बूझ थी। आप बाल्यकाल से ही सादगी, विनम्रता, कुशाग्र बुद्धि एवं भक्ति के प्रतिमूर्ति थे तथा दयालुता, धीरता, उदारता और क्षमा के प्रतीक थे।

जब आपकी उम्र तीन वर्ष की थी, आप रात्रि के समय उठ कर बिस्तर पर बैठ जाते। माँ की आँख खुलती तो क्या देखती कि प्यारा मंगत बैठा हुआ है। उनके मन में ख्याल आता कि शायद बेटा डर के मारे उठ कर बैठ गया है। कहती 'मंगत क्यों बैठ गए हो? सो जाओ लाल।' आगे से उत्तर मिलता, ''माँ, कुछ नहीं ऐसे ही बैठा हूँ। कोई बात नहीं माँ।'' यह कह कर काफी देर तक बैठे रहते (ईश्वर की याद में) और फिर सो जाते।

माँ प्रात:काल परांठे बना कर दिया करती थी कि बच्चा स्कूल में दोपहर को खा सके, किन्तु आप दूसरे निर्धन बालकों की रुखी सूखी रोटियां देखकर परांठे उन्हें दे देते और उनकी सूखी रोटियां स्वयं खाकर खुश होते।

एक दिन माँ ने अपने बेटे मंगत को अतलस का नया कोट पहना कर पाठशाला भेजा। वहाँ आपने एक सहपाठी को फटे वस्त्र पहने देखकर तुरन्त अपना कोट उतार कर उसे पहना दिया और उसका फटा पुराना कोट स्वयं पहन लिया। स्पष्ट है कि बचपन से ही आपके स्वभाव में सादगी,

बलिदान, परोपकार और दूसरों को प्रसन्न करने का कितना अधिक भाव विद्यमान था।

आप पाठशाला से घर लौटते हुए रास्ते में किसी एकान्त स्थान में बैठकर ईश्वर की याद में खो जाते। तेरह वर्ष की स्वल्प आयु में ही आपको आत्मसाक्षात्कार हो गया। इसी दौरान समाधि अवस्था में आपको निम्नलिखित महामन्त्र 3 दिन में अवतरित हुआ।

ओ३म ब्रह्म सत्यम् निरंकार अजन्मा अद्वैत पुरखा सर्व व्यापक कल्याण मूरत परमेश्वराय नमस्तं।।

भावार्थः-

''वह पार ब्रह्म परमेश्वर पहले भी सत्य था, अब भी सत्य है और आगे भी सत्य ही रहेगा। वह अमर तत्व आकार रहित है। वह जन्म मरण से भिन्न शक्ति है। वह परम तत्व केवल अद्वैत ब्रह्म (जिस के समान दूसरा नहीं है) ही तीन काल विद्यमान है। जो सब का आधार है तथा शरीर रूपी पुरी में आत्मा करके वास करता है, उसे पुरखा कह कर पुकारा गया है। वह सब स्थानों और घटों में समान रूप से रमा हुआ है। ऐसे कल्याणकारी परमेश्वर को नमस्कार है।''

इसके पश्चात श्री सत्गुरुदेव जी अन्तर साधना में तल्लीन रहने लगे। उनका अधिकतर समय एकान्तवास में गुज़रने लगा।

सन् 1928 में आपके प्रथम शिष्य कबीर गद्दी अहमदाबाद के महन्त श्री रतनदास जी जो कि सिद्ध महापुरुष की खोज में सम्पूर्ण भारत का दो बार भ्रमण कर चुके थे, परन्तु सिवाए निराशा और पाखण्डवाद के कुछ नज़र नहीं आया, पुनः तीसरी बार जब रावलपिण्डी (पाकिस्तान) में लई नदी के किनारे निराश बैठे मन ही मन में ये विचार कर रह थे कि अब

ये वशिष्ठ, याज्ञवलक, गौतम, कनाद, व्यास जी जैसे ऋषियों को पैदा करने वाली पवित्र भूमि सत्पुरुषों से हीन हो चुकी है और ऐसी हस्ती नज़र नहीं आती जो अज्ञानता के अंधेरे को ज्ञान के प्रकाश से दूर कर सके। इतने में श्री सत्गुरुदेव जी स्वयं उसी समय उस जगह पहुँच गये और महन्त जी की कल्पना निवृत्ति की ख़ातिर उनसे प्रश्न करने लगे, ''प्रेमी, क्या ऋषियों, महाऋषियों को पैदा करने वाली ये पवित्र भूमि सत्पुरुषों से खाली हो चुकी है और अज्ञानता के अन्धकार को ज्ञान के प्रकाश से दूर करने वाला कोई नहीं रहा?'' अपने अन्दरूनी संशयों को प्रगट पाकर महन्त जी ने निगाह ऊपर उठाई जो दुबले पतले सफेद खद्दर के कपड़ों में एक हस्ती को सामने खड़ा पाया। अपने मन के प्रश्नों को हल करने के लिए पूछा कि महाराज जी! अज्ञानता का अन्धकार कैसे दूर हो सकता है? आपने इस पर उत्तर दिया, ''प्रेमी, सत् स्वरूप परमात्मा को इस देह में प्रकाशवान कर लेने से अज्ञानता का अन्धकार दूर हो जाता है।'' महन्त रतनदास जी के संशे की निवृत्ति हुई और कहा, 'परमात्मा की कृपा से मुझे पूर्ण सत्गुरुदेव जी की प्राप्ति हुई और मेरे संशयों का निवारण हुआ।'

इसके पश्चात आपने आजीवन अपना समय सत् सिमरण, निष्काम सेवा और आम जनता को सदाचारी जीवन तथा सत्मार्ग बोध कराने में व्यतीत किया। समाधि अवस्था में अमरवाणी का उच्चारण सहज रूप में, जैसा विचार प्रभु आज्ञा से आता रहा, आपके परम सेवक भगत बनारसी दास जी वाणी को लिखते रहे। कई प्रसंगों में ये रब्बी वाणी लिखी गई। इन सबको एकत्र करके ग्रन्थ श्री समता प्रकाश (पद्य) का रूप दिया गया। अन्तिम पृष्ठ पर सत्गुरुदेव जी ने चेतावनी दी कि किसी को इसका अक्षर, चौपाई अथवा श्लोक भंग करने की आज्ञा नहीं है। ग्रन्थ की नुमायश तथा श्रृंगार न करने का आदेश लिखकर आपने हस्ताक्षर किये।

इसके अतिरक्त दूसरा ग्रन्थ श्री समता विलास गद्य यानी वचनों के रूप में आपके पवित्र कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

ये दोनों समता-शास्त्र सदा-सदा के लिए मानव जाति का मार्ग दर्शन करते रहेंगे।

आपने संगत समतावाद नामक संस्था की नींव रखी। आपका दृष्टिकोण था कि संसार के सभी मानव-मात्र को संगत समतावाद जानें। समता को तमाम विश्व की सेवा का स्वरूप समझें। आप संसार भर की तमाम धार्मिक संस्थाओं के पथ-प्रदर्शकों का आदर करते थे और आपने फ़रमाया कि संगत समतावाद सब मज़हबों के रहनुमाओं की इज्ज़त करती है।

आपने सांसारिक प्राणियों को सत् शान्ति की प्राप्ति के लिए आत्मिक उन्नति के पाँच मुख्य साधनों –

सादगी, सत्, सेवा, सत्संग तथा सत् सिमरण

को अपने निजी जीवन में ढालने का उपदेश दिया।

आप 4 फरवरी 1954 को वीरवार के दिन गुरु नगरी अमृतसर में 50 वर्ष की आयु में अपने नश्वर शरीर का त्याग करके परम सत्ता में विलीन हो गये।

आपका अन्तिम सन्देश :

''इनका मिशन पूरा हो चुका है। वाणी प्रकट हो चुकी है। जैसा कोई रोगी होगा, अपने रोग का इलाज इन ग्रन्थों में से तलाश कर लेगा।'' वह जीवन शैली जिसको धारण करके जीव अपना तथा समाज, देश और मानव मात्र का कल्याण कर सकता है – ''**समतावाद**'' का नाम दिया।

– ''समतावाद क्या है'' –

विचारशील जीव के अन्दर ऐसे प्रश्न पैदा होते हैं कि ये जीवन क्या है? ये संसार क्या है? जीवन में परिवर्तन और जन्म–मरण का चक्कर क्या अर्थ रखते हैं। जीव की मानसिक हालत क्या है और उसकी तृप्ति किस प्रकार हो सकती है? ईश्वर किसको कहते हैं, उसका स्वरूप क्या है और उसके जानने के क्या साधन हैं?

इन सभी प्रश्नों पर समय–समय पर आने वाले सत्पुरुषों ने अपने–अपने ढंग से बतलाया कि ईश्वर सत्य है और उसे कई शब्दों से पुकारा जैसे अल्लाह, गॉड, एक ओंकार, समता तत् आदि। सत्य को अनुभव करने के लिए जीवन की पवित्रता पर ज़ोर दिया। समय–समय पर आए सत्पुरुषों के वचन इसके प्रमाण हैं।

1. जब–जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब–तब मैं अपने रुप को रचता हूँ। **(योगेश्वर श्री कृष्ण)**

2. जब–जब धर्म की हानि होने लगती है और भूमण्डल पर आसुरी प्रकृति एवं अभिमानी पुरुषों की बढ़ोतरी हो जाती है, तब–तब मैं मानुष चोले में आता हूँ और सज्जनों के कष्ट और संकटों का निवारण करता हूँ। **(भगवान श्री राम)**

3. जब समता धर्म का प्रकाश लोप हो जाता है, उस वक्त फिर सत्पुरुष आकर अमली (कर्मनिष्ठ) ज़िन्दगी का प्रकाश दिखलाते हैं। **(महात्मा मंगतराम जी)**

समतावाद के लक्ष्य एवं उद्देश्य :-

1. समता बहुत प्राचीन सिद्धान्त पर खड़ी है, लेकिन जीवन में इसका पालन सदा एक नई धारा है। समता सिद्धान्त जीवन में धारण करने के लिए है, न कि वाद-विवाद में पड़ने के लिए है।

2. समतावाद हर मज़हब, पन्थ, सम्प्रदाय, जाति और देश के लोगों को समान रूप से देख सकता है।

3. समतावाद कोई मज़हब, पन्थ या गिरोह नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक उन्नति को साथ लेते हुए कुदरती जीवन जीने की चाह रखने वाले लोगों का सार्वभौमिक, आध्यात्मिक संगठन मात्र है। हर व्यक्ति अपना परम्परागत विश्वास तथा मज़हब छोड़े बिना इसमें आकर अपनी आध्यात्मिक उन्नति का पूरा-पूरा लाभ उठा सकता है।

4. संगत समतावाद असली प्रेम और शान्ति प्राप्ति की संस्था है। इसकी बुनियाद सादगी, सत्, सेवा, सत्संग और सत् सिमरण पर खड़ी है। यह हर तरह के दिखावटी व बनावटी जीवन के विरूद्ध है।

5. सत्य के मूल-भूत सिद्धान्तों के पालन करने का हर प्रकार से प्रचार करना और हर धर्म, सम्प्रदाय, मत व पन्थ को समभाव से देखना।

6. संगत के सदस्यों में इस बात का प्रचार करना कि वह अपना जीवन निर्विकारी बनावें तथा दूसरों का भला व कल्याण चाहना, अपना मुख्य कर्त्तव्य समझें।

7. भिन्न-भिन्न साम्प्रदायिक व देशीय रीति-रिवाजों के तंग दायरे से जनता को आज़ाद कराना और उनको वाद-विवाद से छुटकारा हासिल कराना तथा निष्काम भाव से सत् कर्मों में जनता का दृढ़ विश्वास बढ़ाना।

8. समभाव ही कल्याण है, समभाव ही जीवन का वास्तविक स्वरूप है और परम धाम है। समभाव ही धर्म है। समभाव की प्राप्ति का यत्न करना ही गुरमुख मार्ग है।

9. शरीर और शरीर की इन्द्रिगम्य समस्त वस्तुओं को नाशवान जानना और जिस सर्व आधार-भूत शक्ति के सहारे यह शरीर तथा समस्त संसार खड़ा है, केवल मात्र वह शक्ति ही सत्य है- ऐसा दृढ़ निश्चय से मानना और इस सत्य की अनुभूति के लिए समता के पाँच मूल-भूत सिद्धान्त सादगी, सत्, सेवा, सत्संग तथा सत् सिमरण पर मन, वचन और कर्म से दृढ़ रहना।

10. अहंकार ग्रसित जीवन कभी भी पूर्ण शान्ति और सन्तुष्टि प्राप्त नहीं कर सकता। अहंकार ही सबसे बड़ी जड़ता और मूर्खता है, ऐसा समतावाद मानता है।

11. समतावाद सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक सिद्धान्तों को तभी ठीक मानता है, जब तक उसका आधार आध्यात्मिक हो।

12. समतावाद प्रेम, उदारता, सहनशीलता और मानसिक संयम पर बड़ा जोर देता है और इसके लिए एक शान्तिमय आन्दोलन के लिए जनता के उत्थान हेतु सर्वदा प्रयत्नशील है।

अनमोल वचन

1. मीठे वचन बोलो, शरीर को सेवा और सत्संग में लगाओ।
2. बड़ी से बड़ी कोशिश करके सत् विश्वासी होना चाहिए।
3. तू अपने आप को ईश्वर के हवाले कर दे, तेरी फ़िकर वह आप करने वाला है।
4. हर समय क्षमा, दया, धीरज, त्याग, सत्, शील, संतोष, दीनता, परोपकार आदि महागुणों को धारण करना चाहिए।
5. सत्पुरुषों के स्वरूप को देखकर उनका आदर्श धारण करना लाज़मी है।
6. हर घड़ी दु:ख में या सुख में ईश्वर की पूजा और उसकी आज्ञा पालन करनी चाहिए।
7. दूसरे का हक ज़हर के समान समझें।
8. ईश्वर को मानने वाले आपस में लड़ा नहीं करते।
9. सब जीवों से प्रेम करना यह ही सत्कर्म जीव को गति देने वाला है।
10. जब तक अपना सही आदर्श जीवन न पेश किया जावे कैसे दुनिया का सुधार हो सकता है।
11. हर वक्त ईश्वर विश्वास और लोक सेवा को धारण करना चाहिये। यह ही परम धर्म, परम पूजा, परम योग और परम सिद्धि है।
12. सबसे बड़ी बंदगी यह है कि हर जीव के साथ अच्छे से अच्छा बर्ताव किया जाये।

13. सब सुख ईश्वर आज्ञा में जानें।

14. नेक इंसान कदम-कदम पर नेकी करता है, बुरा आदमी कदम-कदम पर बदी करता है।

15. अपने सुखों की ख़ातिर दूसरों को दु:ख देने वाला अहंकारी जीव किसी का मित्र नहीं होता।

16. जिस पुरुष में जनता का प्रेम और सेवा हो, वह ईश्वर को मानने वाला है।

17. दीन-दु:खी-अनाथों की तन, मन, धन से यथा शक्ति सेवा करो।

18. सत् कर्म ही जीव को गति देने वाले हैं।

19. वह ही गुणी पुरुष है जिसको अपने गुण का अभिमान नहीं।

20. तमाम कर्म ईश्वर अर्पण करने से कर्म अभिमान का नाश हो जाता है।

21. जब तक अपने कर्म साफ नहीं, तीर्थों का भ्रमण, देवी-देवताओं का पूजन गति नहीं दे सकता।

22. हर जीव मात्र से प्रेम करना, किसी का बुरा न सोचना ही सत् कर्म है।

23. अभिमान छोड़कर दीनता को धारण करके सत् विश्वास से प्रभु के नाम का सिमरण करो।

24. ईश्वर को कर्ता-हर्ता जानकर नित सब जीवों से प्रेम करना, यह ही सत् कर्म जीव को गति देने वाले हैं।

25. जीव अच्छे कर्म करके सुख पाता है, बुरे कर्म करके दु:ख पाता है।

26. खुदा की बंदगी यही है कि किसी को मन, वचन, कर्म द्वारा दु:ख न दिया जावे।

27. मन, वचन, कर्म से किसी के वास्ते बुरा न सोचना और सेवा करना ही श्रेष्ठ कर्त्तव्य है।

28. तुम्हारा भला दूसरे के भले में है। अपनी ज़िन्दगी की वृद्धि चाहते हो तो दूसरे की वृद्धि करो।

29. कपट-छल करने से माया मिल भी जाती है, मगर ऐसी एकत्र की हुई माया दु:खदाई होती है।

30. दूसरों की सेवा करने से अपने पापों का नाश होता है।

31. तन, मन, धन से सेवा करना परम धर्म कहा जाता है।

32. दान देकर प्रभु समर्पण कर दो-ईश्वर तेरी आज्ञा पूर्ण हुई।

33. सेवा उपकार में खर्च करने वाले का मन सदा खुश रहता है।

34. बिना कहे सेवा करने वाला ही गुरमुख है।

35. शुभ कर्मों यानि सत्संग, सत् विचार, सत् सेवा, पर-उपकार से सुख बढ़ते हैं।

36. श्रद्धा, प्रेम से निष्काम सेवा करके ही परम शान्ति मिल सकती है।

37. हर घड़ी दु:ख में या सुख में ईश्वर की पूजा और उसकी आज्ञा पालन करनी चाहिये।

38. अपने फ़र्ज को ठीक तरह निभाना खुशी और सुख देने वाले हैं।

39. किसी को हानि या दु:ख पहुँचाने की कोशिश न करें।

40. निर्मल कर्म को धारण करके प्रभु विश्वास प्राप्त होता है।

41. कल्याण सत्पुरुषों के वचन मानने में है।

42. लोक सेवा और निर्मान भाव चित्त में धारण करें।

43. अपने स्वार्थों का त्याग कर हर समय दूसरों की भलाई चाहना।

44. अपने वचन और कर्म को सत् के आधार पर कायम करना, आचार की शुद्धि है।

45. जीवन में ही जप, तप, सेवा, सिमरण, पुण्य, दान अच्छे से अच्छे कर्म कर लिए वे ही सहायता करने वाले हैं।

46. ईश्वर-विश्वास, ईश्वर-उपासना से जीव परम शान्ति को प्राप्त होता है।

47. हर जीव की तन, मन, वचन, कर्म से सेवा करने के वास्ते हर घड़ी तैयार रहो।

48. जब तक सत्पुरुषों के कहने के मुताबिक जीव नहीं चलता तब तक अशान्ति के जाल से छुटकारा नहीं प्राप्त होता।

49. ईश्वर विश्वासी लोग सत्कर्मों में प्रवृत्त रहते हैं।

50. हर एक सेवा का कार्य बड़ी नम्रता से पूरा करना चाहिए।

महामन्त्र

ओ३म् ब्रह्म सत्यम् निरंकार
अजन्मा अद्वैत पुरखा सर्व व्यापक
कल्याण मूरत परमेश्वराय नमस्तं।।

।। मंगलाचरण ।।

नारायन पद बंदिये, ताप तपन होये दूर।
नमो नमो नित चरन को, जो सरब आधार हजूर।।

हिरदे सिमरो नाम को, नित चरनी करो डण्डौत।
सत् शरधा से पूजिये, रख सतगुरु की ओट।।

दुविधा मिटे मंगल होये, जो चरण कंवल चित धार।
रिद्ध सिद्ध आवे घर माहीं, पावें जय जय कार।।

साचा ठाकर सरब समराथा, अपरम शकत अपार।
'मंगत' कीजे बन्दना, नित चरनी बलिहार।।

सत मारग सोझी मिली, तन मन भया निहाल।
गवन मिटी संसार की, सतगुरु मिले दयाल।।

बार बार करूँ बन्दना, सतगुरु चरनी माईं।
'मंगत' सतगुरु भेंट से, फेर गरभ नहीं आईं।।

बार बार करूँ बन्दना, सतगुरु चरनी माईं।
'मंगत' सतगुरु भेंट से, फेर गरभ नहीं आईं।।

सत् सरूप चिंतवन की भावनायें

तूँ कर्ता, तूँ हर्ता, सर्व तेरी आज्ञा, तूँ नित रखयक,
तूँ नित सहायक, तूँ दीनदयाल, तूँ नित बख़्शनहार,
जो तेरी आज्ञा, तूँ नित पतित-पावन, तूँ नित सर्व-आधार,
तूँ नित संग-वासी, तूँ ही अविनाशी, तूँ ही सर्व आद,
तूँ ही नित अनाद, तूँ ही परम पिता, तूँ ही जगदीश्वर,
तूँ ही गोविन्द, तूँ ही गोपाल, तूँ ही मंगलदाता,
तूँ ही अनंत, तूँ ही बे-अन्त, तूँ ही अपार, तूँ ही दयाल,
तूँ कर्ता, तूँ कर्ता, तूँ कर्ता, सर्व तेरी आज्ञा,
जो तेरी कृपा, सर्व तूँ ही, सर्व तूँ ही, सर्व तूँ ही,
आद-अन्त-मध्य तूँ ही, तूँ ही सत्, तूँ ही अगम,
तूँ ही अवगत, तूँ ही स्वामी, तूँ ही अन्तर्यामी,
तूँ ही कल्याण, तूँ ही जीवन, तूँ ही विधाता,
तूँ ही अन्तर, तूँ ही बाहर, तूँ ही दीनानाथ,
तूँ ही ज्ञान, तूँ ही विज्ञान, तूँ ही अगोचर,
तूँ ही नारायण, तूँ ही नारायण, तूँ ही नारायण।

संगत समतावाद

आरती

तूँ पार ब्रह्म परमेश्वर, तीन काल रछपाल।
नित पाऊँ शरनागती, सत चरण कँवल दयाल।।
तूँ नित पतित उद्धार है, पूरन प्रभ जगदीश।
मोह माया संकट हरो, दीजो ज्ञान संदेश।।
नित ही तेरे चरण की, मन में रहे परीत।
तूँ दाता दातार है, पुरुखोत्तम सुखरीत।।
पवन पानी बैसन्तर, धरती और आकाश।
सबको सरजनहार तूँ, आद पुरख अबनाश।।
घट-घट व्यापक तूँ परमेश्वर, सरब जियाँ आधार।
अनमत कूकर को राख लें, किरपा निद्ध करतार।।
काल करम जाए दूषना, खल बुद्धि हरो अज्ञान।
सत श्रद्धा पाऊँ चरण की, अखण्ड प्रेम चित्त ध्यान।।
दीनानाथ दयाल तूँ, पल पल होत सहाये।
कीरत साचे नाम की, मन तन आए समाये।।
अन्तर का सब खेद हरो, दीजो सत विश्वास।
शरणागत हूँ मंधमती, घट अन्तर करो परकास।।
अन्तरगत सिमरन करूँ, निरन्तर धरूँ ध्यान।
घट घट में दर्शन करूँ, आद पुरुख भगवान।।
तूँ साचा साहिब सरब परकाशी, शबद रूप अखण्ड।
गुनी मुनी उस्तत करें, तन मन पाएँ आनन्द।।

होवें दयाल तूँ सत परमेश्वर, देवें धीर आपार।
निमख निमख सिमरन करूँ, चित चरण रहे आधार।।
काया अन्तर परतख होवें, नाद रूप बिसमाद।
पल पल कीजूँ आरती, तन मन तजूँ व्याध।।
जग आवन सुफला होवे, तेरी आज्ञा मन में ध्याऊँ।
अन्तरगत करूँ आरती, भव दुस्तर तर जाऊँ।।
अन्धमत मूढ़ा नित प्रती, तेरे चरनी करे पुकार।
'मंगत' माँगे दीनता, सत धर्म सुख सार।।
अन्धमत मूढ़ा नित प्रती, तेरे चरनी करे पुकार।
'मंगत' माँगे दीनता, सत धर्म सुख सार।।

समता मंगल

समता धर्म हृदय रसे, बिख ममता होवे नाश।
सत सरूप परमात्मा, जल थल पाऊँ परकाश।।
सब जीवों से प्रेम हो, तन मन सेवा धार।
समता साधन पाये के, नित परसाँ जै जैकार।।
सत कर्म सत निश्चय, निर्मल पाऊँ विचार।
'मंगत' समता धार के, जीत चलो संसार।
सत कर्म सत निश्चय, निर्मल पाऊँ विचार।
'मंगत' समता धार के, जीत चलो संसार।।

गुरुदेव महात्मा मंगतराम जी की चेतावनी

जब तक तू अपने कल्याण के लिए स्वयं सोचेगा, समझेगा, मानेगा और उसी के माफ़िक (अनुसार) चलेगा नहीं, तब तक साक्षात् ब्रह्मा भी अगर आ जायें तो तेरा कुछ भी नहीं बन सकता।

ये शरीर अपूर्ण है, इसके भोग अपूर्ण हैं, यह संसार अपूर्ण है, इस अपूर्ण शरीर और अपूर्ण संसार में पूर्णताई की तलाश करना मूर्खता है। यह बात तू आज समझ ले, दस साल बाद समझ ले या चार जन्म बाद समझ लेना, आख़िर यह ही समझना पड़ेगा। क्यों अपने सफ़र को लम्बा करता है। उठ जाग और अपने कल्याण के मार्ग पर बढ़ चल।

- सत्गुरुदेव मंगतराम जी

भारतवर्ष में अन्य स्थानों पर भी संगत समतावाद के आश्रम व सत्संग शालाएँ हैं, जिनके बारे में जानकारी व अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी निम्नलिखित आश्रम से ली जा सकती है।

HEAD OFFICE:
SANGAT SAMTAVAD
SAMTA YOG ASHRAM
CHACHHRAULI ROAD
JAGADHARI-135003
www.samtavad.org

मुख्य ऑफिस :
संगत समतावाद
समता योग आश्रम
छछरौली रोड
जगाधरी - 135003
www.samtavad.org